



शोध परिधि

7  
ISSN-2349-9575  
साहित्य, कला, संस्कृति, मानविकी एवं समाज विज्ञान की  
द्विभाषिक घट्मासिक अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका



शोध परिधि

134

## बदलते परिवेश में जनसंचार की विभिन्न रूपों में अहम भूमिका

डॉ० जीत सिंह

स.प्रो. एवं विभागाध्यक्ष  
राजकीय महिला (पी.जी) महाविद्यालय  
कांधला (शामली)

या व्याप्त की क्रिया  
जैसे कार्य सम्पर्क  
विचार और मनोरंजन  
समाचार तक पहुँचाने  
जाते हैं। जनसंचार  
जिसका जीवन में हो  
जाता है एक-दूसरे वे  
जौन उसके विचारों  
में विकास के प्रसार,  
विद्यार्थियों की उपलब्ध  
सम्भाल बना दिया है  
जानकारी रखे, हर जै

भारत में जनसंचार से मिला है परन्तु  
जनसंचार संवर्धन करें तो  
जो जानकारी भारत का  
जल्द है, जो वीणा का  
जल्दी के बीच संवर्धन  
भूतराष्ट्र और  
जनसंचार द्विखाने और इन  
जैसे प्रकार संजय की  
जानकारी समृद्ध संचार

जनसंचार में  
जल्द च भीड़। संचार  
जैसका अर्थ है समाज  
समूह से निकला  
जैसका करना। यह अंती  
में वर्ण्य रूप से है, जो

### शोध सारांश

वर्तमान युग सूचना क्रान्ति का प्रगतिशील युग है। जब युग बदलता है तब उसके आदर्श बदलते हैं, उसके मूल्य बदलते हैं, उसकी जीवन पद्धति बदलती है और ये सारे बदलाव युग की आवश्यकताओं के परिपेक्ष्य में होते हैं। सत्य तो यह है कि मानदण्ड और स्वरूप कभी स्थिर नहीं रहते अपितु युग की गति के साथ वे भी गतिमान रहते हैं।

पत्र-पत्रिकायें, रेडियो, दूरदर्शन, मोबाइल तो सूचना क्रान्ति के सफल और सशक्त माध्यम थे ही परन्तु आज न्यू मीडिया भी सशक्त साधन संचालित हैं।

-सम्पादक

आज जनसंचार मानव जीवन की दिनचर्या का हिस्सा बन चुका है। कल्पना कीजिए, एक दिन यदि समाचार-पत्र, रेडियो, टी.वी. चैनल, इंटरनेट सब बंद हो जाये तो ऐसा लगेगा मानो पूरी दुनिया थम-सी गई हो। जीवन में कुछ बचा ही नहीं। खालीपन-सा लगता है। समय भी नहीं कटता। व्यक्ति अपने आपको अकेला, तन्हा तथा लाचार-सा महसूस करता है। मनुष्य जिस प्रकार समूह में रहने का आदि हो गया है, उतना ही अब जनसंचार माध्यमों का आदि

हो गया है। चाहे वह पढ़ा-लिखा वर्ग हो या अशिक्षित युवक हो या वृद्ध, महिला हो या पुरुष, यहाँ तक कि बच्चे भी मीडिया के दीवाने बन चुके हैं, यह भी कहा जा सकता है कि सब मीडिया न आदि हो चुके हैं।

विचारों के आदान-प्रदान की सामूहिक प्रक्रिया जनसंचार कहलाती है। नए ज्ञान वे सम्बन्ध में अधिकाधिक लोगों को जानकार होना प्रसार है। प्रसार का अर्थ होता है फैलाना

Vol.-II, Issue-II, December 2015 "SHODH PARIDHI" International Research Journal